माघ पोर्णिमा
16-2-2022
बुधवार

सुक्ष्मशरीर

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार — — —
सामान्य मनुष्य जन्म के समय अपने साथ,
"कुंडलीनी शकती," "सुक्ष्मशरीर," व "आत्मा," के
साथ शरीर धारण करता है,
"कुंडलीनी शकती" वह शकती होती है, जिसमे उसके
पुर्वजन्म का सारा रेकार्ड भरा होता है, पुर्व जन्मो मे
उस मनुष्य क्या अच्छे कार्य किये और पुर्वजन्मो मे
उसके हाथ से क्या बुरेकार्य हटीत हुये और ठिक
इसी प्रकार से "सुक्ष्मशरीर" वह होता है, जिसमे
उस मनुष्य ने अपने पुर्व जन्मो मे क्या-क्या
आध्यात्मीक प्रगती की इसका संपुर्ण रेकार्ड
रहता है, और आत्मा वह परमात्मा शक्ती
ही होती है, जिसको लेकर मनुष्य शरीर
धारण करता है, और जो "शरीर" धारण करता
है, वह "माँ" और "बाप" के कारण ही मिलता है,
आत्मा ही "माँ" "बाप" का चुनाव करती है, आत्मा
ही तय करती है, किस माँ बाप के घर पैदा

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

(२)

होने पर वह अपने जिवन का उद्देश को पुर्ण कर सके लेकीन अच्छे माँ, बाप, के घर पैदा होने पर भी आवश्यक नही की आत्मा अपने जिवन का "उद्देश" याद रख सके कई बार आत्मा अच्छे माँ, बाप, के घर पैदा तो होजाती है, पर जिवन मे "गलत संगत" के कारण अपने जिवन का क्या "उद्देश" था वही भुल जाती है, और भटक जाती है, क्योकी बुरी "संगत" का असर तो पडता ही है, इसलीये महत्वपुर्ण यह नही है, की आपने कौन्स घर मे जन्म लिया महत्वपुर्ण यह है, की आपने अपने जिवन के उद्देश को कितना ध्यान रखा - सामान्य तह मनुष्य विचार करता है, और विचार जैसी "संगत" होती है वैसे ही आते है। और वह जैसे विचार करता है, वैसे ही "कर्म" उसके हाथ से घटीत होते है, और उन कर्मो को भोगने के लिये उसे जन्म लेकर देह धारण करना पडता है, मनुष्य का पहला जन्म तो केवल "जिग्यासाँवश ही होता है, की मनुष्य जिवन क्या है, लेकीन बाद के सारे जन्म तो "कर्म भोगने" के लिये ही होते है, अगर बुरे कर्म किये तो अगले जन्म मे बुरे कर्म भोगने के लिये जन्म लेना पडता है, और अच्छे कर्म किये तो अच्छे कर्म भोगने को जन्म लेना पडता है।

इसका सीधा सरल अर्थ है, "पुण्यकर्म करने से मोक्ष की प्राप्ती होती है, यह गलत धारणा है," क्योंकी पुण्यकर्म करोगे तो वह पुण्यकर्म भोगने जन्म तो लेना ही पडेगा।
हमारे शास्त्रो मे "दान" को अत्याधीक महत्व दिया गया है, और दान सुपात्र को ही करना चाहीये अब हम "दान" को समझते है, दान पुण्यकर्म समझकर नही करना चाहिये तो वह पुण्यकर्म नही कहलाता, "दान" तो केवल आत्मशुद्धी के लीये करना चाहीये" दान करके मुझे अच्छा लगा दान करने से मेरी आत्मा को शान्ती मीली मेरी आत्मा को प्रसन्नता हुयी केवल इसी उद्येश से ही दान करना चाहीये जन्म से मनुष्य केवल पाना, पाना ही चाहता है, तो अपने स्वभाव को एकदम तो बदल नही सकते इसलीये दान करके हम थोडा पाना पाना रोक तो सकते ही है, अगर आपने दान को पुण्यकर्म माना तो वह पुण्यकर्म भोगने आपको दुसरा जन्म लेना ही पडेगाँ अगर दुसरा जन्म ही लेना नही चाहते तो एक ही मार्ग है। "कर्ममुक्त अवस्था" अपने ही जिवनकाल मे प्राप्त कर लो।

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

यह कर्ममुक्त अवस्था "समग्र समर्पण योग" से प्राप्त की जा सकती है, और अनेक आत्माओं ने प्राप्त भी की है, इस अवस्था मे जाने पर आपके हाथो से बुरे कर्म होंगे ही नहि और जो पुण्यकर्म करोगे वह अपने साथ मैंने किये मानकर जोडोगे नहि और अपने ही जिवनकाल मे परमात्मा की प्राप्ती कर लोगे और फीर आपके जिवन मे पाने के लिये कुछ भी बाकी नहि रहेगाँ।

मनुष्य के जिवन का केवल एक ही उद्धेश होना है, परमात्मा को पाना वह उद्धेश एक बार प्राप्त हो गया तो फीर पाने जैसा इस-जगत मे कुछ भी नहि रह जाता है, क्योकी इस जगत मे कुछ भी प्राप्त हो तो भी और पाने के इच्छा बाकी रह ही जाती है, "केवल और केवल परमात्मा ही ऐसा है, जो पाने के बाद पाने की इच्छा ही समाप्त हो जाती है,"

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

अब प्रश्न उठता है, परमात्मा को पाना कैसे मेरी नानी सदैव कहती थी "परमात्मा तो अविनाशी शक्ती है, वह कल भी थी आज भी है, और कल भी रहेगी।"

बस इसी वाक्य से मुझे आज के परमात्मा को खोजने की इच्छा जागृत हुयी और इच्छा के कारण ही परमात्मा तक पहुंच सका मुझे परमात्मा हिमालय "नेपाल" मे मेरे "गुरु" श्री शिवबाबा के रुप मे मिले और जब उन्होने अनुभुति करायी तो "आत्मज्ञान" हुआ की श्री शिवबाबा मेरे शरीर के "गुरु" थे और मेरे ही सुक्ष्मशरीर के शिष्य-भी थे पुर्व जन्म मे मेरे ही सुक्ष्मशरीर ने उन्हे आत्मज्ञान की धरोहर को संभालने को दिया था; "ताकी जब मेरा अगला जन्म बांटने के लिये होगा तब इस "आत्मज्ञान-" की मुझे आवश्यकता होगी, मेरे पुर्व जन्म मे आत्मज्ञान प्राप्त तो कर लीया था पर आत्मज्ञान सहीत मोक्ष प्राप्ती संभव नही थी आत्मज्ञान को बांटना हिमालय मे संभव ही-

नही था आत्मज्ञान को बांटने के लिये उम्र ही बाकी नही रही थी इसलीये आत्मज्ञान को बांटने के लिये एक शरीर धारण करना आवश्यक था. क्योंकी आत्मज्ञान बांटे बीना मोक्ष नही है,
इसी लीये पुर्वजन्म मे आत्मज्ञान की धरोहर की अनुभुती करा के अपने "प्रिय शिष्य श्री शिवबाबा" को वह सौंप दी थी ताकी अगला जन्म लेकर वह धरोहर वापस पा सकु. और वही कार्य उन्होने पुर्ण भी किया- और जब आत्मजागृती का समय आया जब सामुहिकता मे आत्मजागृती हो सके तब जन्म लेकर वही आत्मज्ञान उनसे प्राप्त कर लीया- इस जन्म मे उनसे ही आत्मज्ञान मिला है, इसलीये वह इस शरीर के "गुरु" भी है, वैसे भी गुरु एक तत्व है; कोई शरीर नही होता है. वह "गुरुतत्व" कल भी था आज भी है. और कल भी होगा, गुरु का शरीर तो माध्यम ही है, "गुरुतत्व" का / गुरुतत्व तो उसका-

सुक्ष्मशरीर ही होता है, अगर सामान्य भाषा-मे समझना हो तो स्थुलशरीर "पंतग" है, और सुक्ष्मशरीर "पंतगबाज" है।
आकाश मे उंची उडती हुई "पंतग" तो हमे दिखती है, पर उस पंतग को उडाने वाला "पंतगबाज" हमे नहीं दिखता है, वैसे भी जो दिखता है, हम उसी को देख पाते है, जो नही दिखता हम उसे नही देख पाते है, लेकीन सोचो पंतग अच्छे से आकाश मी उडरही है, पंतग- अन्य पंतगो से कटने से बच रही है, उंची और उंची ही जा रही है, तो कोई तो निरंतर-ही इतने समय उसे उडा ही रहा है, लेकीन हमारी दृष्टी की एक सीमा है, हम उसी सीमा तक ही देख सकते है, अब पंतग को तो दुर से भी देखा जा सकता है, "पंतग" आकाश मे जितनी उंची उडेगी, पंतग को दिखने का दायरा उतना ही बडा होगा दायरा जितना बडा होगा उतने ही अधीक से अधीक लोग उसे देख पायेगे लेकीन पंतगबाज को तो वही लोग जान पायेगे जो उसके शरीर के पास

मे हो पास के लोग ही जान पायेगे की आकाश मे इतनी ऊंची पतंग इतने अधीक समय से अच्छे से उड रही है, इस पतंग को उडाने वाला पतंगबाज यही व्यक्ती है,

ठिक ऐसा ही "गुरु" और "गुरुतत्व" का है, ऐसा ही स्थुल शरीर व सुक्ष्मशरीर का भी है, सदैव ही परमात्मा का माध्यम "गुरु" के रुप मे जन्म लेता है, और देह धारण करता है, "गुरु" के जिवनकाल मे तो बहुत कम ही लोग उसे जान पाते है, क्योंकी गुरु शरीरधारी होता है, और शरीर की एक सिमा है, उसी सिमा मे ही लोग जान पाते है। दुसरा परमात्मा का माध्यम जब कभी "गुरु" के रुप मे जन्म लेता है, तो कुछ सुरक्षा कवच भी धारण करता है, ताकी अनावश्यक लोगो की भीड उसके आसपास न जमा हो जाये हो सकता कुछ शरीर की ही आदते या व्यवहार शरीर का ऐसा होता है, जिससे लोग उसे पागल फकीर, या पागल ठाकुर, समझने लग जाते है, और उससे दुर ही रहते है, और बहुत कम लोग ही उसे उसके जिवनकाल मे जान पाते है।

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

"गुरु" का उद्देश अपने जिवनकाल मे एक ही होता है, गुरुकार्य करना क्योकी "गुरु का जिवनकाल कम और गुरु का कार्यक्षेत्र अती विशाल होता है," लोग यह बात नही जानते है, पर वह स्वंयम जानता है, "उसके जिवन का एक एक क्षण भी अती महत्वपुर्ण होता है;"

"गुरु" के जिवनकाल मे तो केवल स्थुल शरीर के माध्यम से ही कार्य होता है, लेकीन गुरु के समाधीस्थ होने के बाद सुक्ष्मशरीर से उसका कार्य प्रारंभ हो जाता है, स्थुल शरीर का कार्यक्षेत्र तो बहुत ही छोटा होता है, लेकीन "सुक्ष्मशरीर" का कार्यक्षेत्र समुचा विश्व ही होता है, यह इसलीये होता है, क्योकी अनेको जन्मो मे तपस्या व साधना उसने जो की होती है, उसी की शकतीयो से ही सुक्ष्मशरीर बनता है, सुक्ष्मशरीर से ही उसकी आध्यात्मिक ज्ञान संपदा का अंदाजा लगाया जा सकता है, "गुरु" कर्ताभाव से परे होता है इस लीये वह स्थुल रुप मे अपने जिवन मे कभी कोई कार्य नही करता है।

Gujarat Samarpan Ashram | Office: +91 9898011555
Mahudi Village, Anodiya, Gandhinagar, Gujarat - 382855 | Email: support@gurutattva.org
Office address: Guru Tattva Bhavan, Shivaji Park, Street No. 4/8, Near Income Tax Society, Raiya Road, Rajkot – 360005

लेकीन उसके सानीध्य मे कार्य सफल होते ही जाते है, क्योकी अनेको शक्तीयो के साथ उसका सुक्ष्म शरीर काम करते ही रहता है, पर दिखता कीसीको नही है, ठिक एक पंतगबाज की तरह स्वंयम नही दिखता पर अपनी पंतग आकाश की बुलन्दी पर पंतग उडाकर उसका दर्शन आसपास के लोग को कराते ही रहता है,

मनुष्य के जिवनकाल मे यह महत्वपुर्ण नही है, की उसने कीतना धन कमाया कीतनी सम्पत्ती जोडी उसके पास कीतनी कारे है, कीतना सोना जवाहरात है, क्योकी यह सब अंन्तीम क्षण तो साथ जाने वाले नही है, और आज उसे "कर्म मुक्त अवस्था" प्राप्त हुयी है. या नही मनुष्य ने इसका अवलोकन करना चाहीये, इसे ही "मोक्ष का स्थिती" कहते है, जब आपके जिवन मे कोई कर्म ही बाकी नही रहेगाँ तो

Shree Shivkrupanand Swami
Founder
Gurutattva

दुसरा जन्म अपने कर्मों को भोगने लेना ही नही पड़ेगाँ। दुसरा जन्म लेने का उद्देश ही अपने पापकर्म या पुण्यकर्म को भोगना है। क्योकी शरीर से कर्म कीये तो शरीर से ही भोगना तो पड़ेगे ही लेकीन जब मनुष्य अपने पुर्वजन्म के कर्म भोगने को जन्म लेता है, तो वह कर्म तो भोग लेता है, पर नये कर्म और खड़े करलेता है।

और फिर यह नये कर्म उसके नये जन्म लेने का कारण बन जाते है, और फीर "कर्मचक्र" के चक्कर मे मनुष्य जन्म व मृत्यु के बीच ही घुमते रहता है, इस कर्मचक्र से बाहर निकलने का एक ही मार्ग है, वह है, "आत्मसाक्षात्कार" मनुष्य को उसके जिवन-काल मे आत्मा का साक्षात्कार और वह एक शरीर नही है, आत्मा है, इसका बोध हो सके तो ही शरीरभाव समाप्त हो सकता।

(12)

इस लीये प्रत्येक जन्म मे ही आत्मसाक्षात्कार पाने की इच्छा रखता है, कई साधु संत तो जिवनभर इसके लिये तपस्या करते रहते है,

"आत्मसाक्षात्कार एक ईश्वरीय घटना" है, यह जिवन मे प्रयत्न से नही घटती है, केवल और केवल "ईश्वर कृपा" से घटती है, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के लिये परमात्मा का वर्तमान रुप की कृपा होना आवश्यक होता है, वर्तमान समय का रुप हमे तब मिलता है, जब हम वर्तमान समय मे रहते है, "आत्मअनुभुती एक जिवन्त प्रक्रिया होती है," इसलीये यह केवल और केवल वर्तमान मे ही घटती है, प्राय: मनुष्य के 90% प्रतिशत विचार तो सदैव भुतकाल के ही होते है, इसी कारण वह परमात्मा के केवल भुतकाल के रुपो को ही जानता व मानता है, और बचपन से ही यही संस्कार होने से एक धारणा ही बन जाती है, की परमात्मा याने जो वर्तमान मे नही है, वह यही धारणा का संस्कार आध्यात्मीक प्रगती की सबसे बडी बाधा है, यह केवल "आत्मअनुभुती" होने पर ही टुट सकता है,

"आत्मअनुभुती" होने पर मनुष्य को यह ज्ञान प्राप्त हो जाता है, की परमात्मा कही भी बाहर नही है, और मैं जिवनभर उसे बाहर ही खोज रहा था परमात्मा तो आत्मा के रुप मे मेरे ही भितर बैठा हुआ है,
और फीर मनुष्य का शरीरभाव ही समाप्त हो जाता है, फिर उसके जिवन मे जो भी कर्म होते हैं, वह तो होते है, लेकीन "कर्ता" का भाव न होने से वह कर्म उसके साथ जुडते नही है, फिर मनुष्य कर्म करता नही है, उससे कर्म घटीत हो जाते है। मनुष्य आत्मअनुभुती के बाद पहले अपने पुर्व जन्म के संचीत कर्म भोगता है, क्योकी "अब वह उस मार्ग पर चल निकला होता है, जीस मार्ग पर दुसरा जन्म ही नही है," तो पुर्व जन्म मे कीये गये शरिर से कर्म तो शरीर से ही भोगना तो होगे ही क्योकी कर्मो से मुक्ती नही है, इसलिये वह पहले अपने पुर्वजन्म के कर्म भोगता है, लेकीन गुरु के सानीध्य मे भोगता है, गुरु कोई अकेला नही होता उसके साथ

लाखो पवीत्र व शुद्ध आत्माओ की सामुहीकता होती है, इसी कारण कर्म तो भोगता है, पर कर्मों का भोगते समय एहसास नही होता है,
आप एक "उदाहरण" से समझ सकते हो सामान्य मनुष्य का जिवन मान लो एक ग्लास का पानी है, और उसमे एक चम्मच काली शाई डाल दी तो पुरा ग्लास का पानी काला हो जाता है, ठिक वैसा ही सामान्य मनुष्य "मैं" के अंहकार के कारण जिता है, और देहभाव के कारण उसकी स्थिती तो केवल एक ग्लास के समान ही होती है, जो जिवन मे आये एक छोटे से समस्या से भी जिवन प्रभावीत होजाता है, लेकीन अगर उसी एक चम्मच शाई को गंगा नदी मे डालो तो वहाँ नदी मे भी शाई तो काली ही रहेगी पर उसका अस्तीत्व नगण्य हो जायेगा ठिक वैसा ही "आत्मअनुभुती" के बाद मनुष्य अगर अपना समर्पण अपने गुरु के प्रति करता है, तो वह मनुष्य ग्लास के पानी से गंगा नदी का पानी बन जाता है, समर्पणभाव से किया गया ध्यान मनुष्य का "मैं" का देह का अंहकार

समाल कर सामुहीकता की शक्ती प्रदान करता है, फिर मनुष्य के जिवन से "कर्ता" का भाव ही नही रह जाता है। फीर मनुष्य" कर्म करता नही है, कर्म होते है।"

नियमीत ध्यान करने से मनुष्य के आसपास एक सकारात्मक विचारो का "आभा मंडल" ही निर्माण हो जाता है, और जब नकारात्मक विचार ही नही होते तो नकारात्मक कर्म भी उसके हाथ से घटीतनही होते है, और फीर केवल अच्छे कर्म ही उसके हाथ से हो जाते है, और जो अच्छे कर्म होते है, वह भी उसे अपने साथ नही बान्धता है। क्योकी कर्म करते समय मैं का शरिर भाव नही होते है, वह महसुस भी करता है, मै सोच भी नही सकता इतना अच्छा कार्य मेरे से हो सकता है, और अपने से किये गये कार्य वह "गुरुकृपा" से ही हुये यही सोचता है, और यही मानता इसके कारण अच्छे कर्म भी उसके साथ नही बन्धते है, तो इस प्रकार जिवन मे मनुष्य "कर्ममुक्त अवस्था"

को प्राप्त कर लेता है, जहाँ बुरे कर्म उसके हाथो से होते ही नही है, और जो अच्छे कर्म होते है, वह अपने "गुरु" को समर्पीत कर देता है,
इस प्रकार की अवस्था को ही "कर्म मुकत अवस्था" कहते है, इस अवस्था को "समर्पण ध्यान संस्कार" से पाया जा सकता है, और "कई साधक साधीकाओ ने अपने जिवन मे ही इसे पा लिया है, और जिन्होने ने भी पाया है, उनके जिवन मे अब पाने के लिये कुछ भी बाकी नही रहा है," इसी कर्मयुकत अवस्था को ही मुकतअवस्था या मोक्ष की स्थिती कहते है, यह मोक्ष की स्थिती मनुष्य को अपने जिवनकाल मे ही प्राप्त करना होती है, यह भी बडी गलत धारणा है, की मोक्ष वह स्थिती है, जो मृत्यु के बाद मिलती है, नही - प्रत्येक मनुष्य को अपने जिवनकाल मे शरीर मे रहते ही मोक्ष की स्थीती पाना होता है-
मोक्ष कुछ पाने का नाम नही है, सभी मे से "मुकत" होने का नाम है।

मृत्यु के बाद हमारे पास शरीर ही नहीं होता। तो ध्यान कैसे करेंगे और ध्यान नहीं करेंगे तो मुक्त कैसे होंगे इसलीये सदैव याद रखो "जिवन का प्रत्येक क्षण-महत्वपुर्ण है।"

आप का "आज वर्तमान जैसा बीताओगे भवीष्य भी वैसा ही बनने वाला है," आप अगर आज-प्रसन्न हो खुश हो आनंदी हो तो भवीष्य-भी प्रसन्न व आनंदी होने वाला है. और अगर आज दुःखी हो जेलस हो तो भविष्य भी दुःखी होने वाला है,

वर्तमान की प्रत्येक निव की ईट पर ही भवीष्य-का भवन तैयार होते रहता है, भवीष्य तो आपके ही हाथ मे है. जैसे वर्तमान मे रहोगे तो-आपका भवीष्य भी वैसा ही होगा। इसलीये प्रथम अच्छा संगत मे रहो बुरी संगत से दुर रहो ध्यान अच्छी संगत है। ध्यान में जमा किया प्रत्येक क्षण जिवन मे आपके अंतीम-सांस तक आपके साथ रहेगा। आप के अंतीम सांस के समय न रिश्ते साथ होते है, और

ने धन संम्पत्ती साथ रहती है।" जिस प्रकार हम भविष्य के लीये धन संचीत करते है। ठीक वैसा ही अपने आप को समय देकर आत्मा के लीये = ध्यान को समय दो यह "आध्यात्मीक - इनवेस्टमेन्ट" है, और सदैव ही आपके पास रहेगी। इसे कोई नही ले सकता है।

स्थुल शरीर तो केवल माध्यम होता है। आपको जो "आत्म अनुभुती" प्राप्त हुयी वह "सुक्ष्म शरीर" से हुयी, आपके जिवन जो भी आपको अनुभव आये या अनुभुतीया होती है, वह भी सुक्ष्म शरीर से जुडने के कारण ही होती है। स्थुल शरीर तो नाशवान है। सुक्ष्म शरीर ही शाश्वत है, इस लिये सुक्ष्म शरीर के साथ जुडे सुक्ष्म शरीर से जुडने का आसान मार्ग "प्रेम" का - मार्ग है, सुक्ष्म शरीर से प्रेम करो एक आत्मा का एक आत्मा से जुडने का सबसे आसान मार्ग "प्रेम" का है, क्योकी आत्मा का यह सबसे शक्ती शाली "गुण" होता है, इससे किसी भी आत्मा के साथ जुडना आसान होता है।

सुक्ष्म शरीर का क्षेत्र तो अती विशाल है, वह तो विश्वस्तरीय है, "सुक्ष्म शरीर के साथ सालो की जन्मो जन्मो की साधना की शक्ती है," स्थुल शरीर तो वह पंतग है, जिसे सुक्ष्मशरीर रुपी पंतगबाज उडा रहा है।

अब आपको प्रश्न आया होगा "सुक्ष्मशरीर" से हम जुडे है, या नही यह हम कैसे जान सके तो यह समझ लो आपके जिवन मे बडे बडे "संकट" आये और चले गये आपका का कार्य आप सोच भी नही सकते इतने "आसानी" से हो गया आपको आपकी अपेक्षा से अधीक यश प्राप्त हुआ आप के जिवन मे "परमात्मा" को पा लीया यह संपुर्ण समाधान प्राप्त हो गया अब "जिवन मे पाने के लिये कुछ भी नही रह गया" यह सभी अनुभव और अनुभुतीया सुक्ष्म शरीर से जुडने की ही है, आपको सुक्ष्म-शरीर से जुडने के बाद आपके शरीर मे आपकी हथेलीयो मे और रिढ की हड्डी मे सहस्त्रार पर थोडे थोडे "व्हेवरेशन" महसुस होगे, ध्यान मे उठने की ही इच्छा नही होगी आपके भितर किसी भी प्रकार की पाने की इच्छा बाकी नही रहेगी,

(20)

आपके मन मे किसी के भी प्रति दुर्भावना नही रहेगी; आप इतने पवीत्र व शुद्ध हो जाओगे की परमात्मा-को अपने ही भितर महसुस करोगे. यह सब आपको "सुक्ष्मशरीर" के "सानीध्य" मे प्राप्त होगा.

पता नही क्यो आज लगा की "गुरुमार्ग" तो देश की "सेना" मे भर्ती होने जैसा ही है, एक सैनीक-जब कभी अपने देश की सेना मे भर्ती होता है तो उसकी सारी जिम्मेदारी "सेनापती" की हो जाती है. और सैनीक प्रत्येक क्षण अपने सेनापती ने बताये "नियमो का और अनुशासन" का पालन करता है। और सेना मे भर्ती होने के कारण वह सैनीक-शत्रु सेना का भी शत्रु हो जाता है, और शत्रु की सेना उसपर आक्रमण कर सकती है, और कईबार करती भी है, और ऐसी कठीण-स्थिती मे सैनीक को "सेनापती" सुरक्षा प्रदान करता है, ठिक ऐसा ही गुरुमार्ग भी होता है। गुरुमार्ग मे सैनीक साधक होता है, जो सदैव साधनारत रहता है, और सेनापती की भुमीका मे "गुरु" होता है, और "नकारात्मक शक्तीया" शत्रु सेना का कार्य करती ही रहती है, और साधक शत्रुसेना के निशाने पर रहता है, साधक-

शत्रुसेना के निशाने पर इसलीये आता है, क्योंकी वह गुरुमार्गी है, यह याद रखो सफेद कपडा जितना स्वच्छ व सफेद होगा दाग लगने की संभावना उतनी ही अधीक होती है,
इसका एक ही अर्थ है। की अगर गुरुमार्ग मे रहकर कर्ममुक्त अवस्था को पाना चाहते हो तो "सुक्ष्म शरीर" को "संपुर्ण समर्पीत" रहो तो ही जिवन में नकारात्मक शक्तीयो से बचे रह कर जिवनमें मुक्त अवस्था प्राप्त कर सकते हो अन्यथा इस इस गुरुमार्ग से दुर ही रहो रहो तो संपुर्ण तह रहो या न रहो आधे अधुरे मत रहो "आधे अधुरे लोगो का यह मार्ग नही है" क्योकी आधे अधुरे लोग इस मार्ग से कब दुर हो जायेगे इसका उनको भी पता नही चलेगा सदैव याद रखो जिवंत गुरु आपको आपका हाथ पकडकर साथ लेके चलता है, और समाधीस्थ गुरु की आपको ही उंगली को पकडकर चलना पडता है, अगर आप गुरु का हाथ छुडाकर भाग खडे हुये तो भवीष्य आप क्या उंगली पकड भी पाओगे ?

जो पर्वतारोही ऊंचे ऊंचे पहाड़ो के शिखर चढ़ते ही रहते है। और वे भी जानते है, जितने ऊंचे-चढ़ो उतना ही गिरने का डर बना रहा है, और उतना ही खतरा रहता है, और जिन्हे मृत्यु का डर है, या ऊंचाई का डर है, वे इस पर्वतारोही मार्ग से दुर ही रहते है। क्योंकी "ऊंचाई पर चढ़ना जितना कठीन है, उससे भी अधीक-कठीन है, ऊंचाई पर बने रहना।"

इसी लीये पर्वतारोही समाज मे चंद लोग ही रहते है, सभी पर्वतारोही नही होते है, सामान्य मनुष्य तो यह सोच सकता इतने ऊंचे पहाड पर चढ़ने की क्या आवश्यकता है, इतना जोखीम उठाने की क्या आवश्यकता ऐसा क्यो करते है, उन्हे इससे क्या मीलता होगा। लेकीन जो पर्वतो पर चढ़ते है, वे ही जानते है, उन्हे क्या प्रकृती के सानीध्य मे आंनद प्राप्त होता है, पर्वतो पर चढ़ना एक "जुनुन" है, पर्वत पर पहुच कर उस पर्वतारोही को अपार निर्वीचारीता का अनुभव

होता है। अपार शांन्ति का अनुभव होता मैंने भी जन्म लेकर इस पर्वत के उच्चशिखर पर पहुचकर अपने जन्म को "सार्थक" किया। यह अनुभव होता इस आंनद के लिये पर्वतारोही अपनी जान भी जोखीम मे डालता है, कई बार पर्वतारोही को पर्वत से गिरकर मृत्यु भी हो जाती है, तो भी पर्वतारोहि अपने प्रयास जारी ही रखता है।

विशेषकर हिमालय मे जो पर्वतारोही जाते है, एवरेस्ट पर चढ़ने के लिये उन्हे तो कदम कदम पर मौत के दर्शन होते रहते है, आक्सीजन की कमी होने से जैसे सिलेन्डर लेकर जाते है. और रास्ते मे जगह जगह मरे हुये पर्वतारोही की लाशे दिखती रहती है, जो-बारबार उन्हे मृत्यु का एहसास कराती है, फिर भी वे एवरेस्ट पर इसलीये चढ़ते है, की यह अपार "निर्वीचारीता" पाने एक "शौक" है, निर्वीचारीता एक अलग ही आंनद है, वही पाने यह लोग अपनी जान भी जोखीम मे डाल देते है, इतनी बहुमुल्य निर्वीचारीता की स्थिती है, जो उन्हे समाज मे कभी नही मिलती है।

"गुरुमार्ग में भी शौक से ही आना चाहिये" कुछ भी पाने की अपेक्षा से मत आओ। इस मार्ग मे लाखों लोग आते है, पर कर्ममुक्त अवस्था के उच्च शिखर पर वही पहुच पाते है, जिनके जिवन का उद्देश ही वहाँ पहुचना होता है,

"यह मार्ग ऐरे गेरे नथ्थु खैरे का मार्ग नही है," सामान्य मनुष्य तो जन्म लेता है, और मर जाता है, पर जिवन मे उसी के भितर आत्मा भी होता है, इसका जिवन मे कभी एहसास ही नही होता सारी दुनीया को जान लेता है, सिवाय अपने आप को जाने अपना चेहरा देखने के लिये मीरर की आवश्यकता होती है. "वह मिरर ही गुरु है," गुरु एकमात्र ऐसा माध्यम है, जो हमे अंन्तरमुखी करता है, बाकी कोई भी दुनीया मे हमे ऐसा नही है, जो हमको हमसे मिला दे सुक्ष्मशरीर स्थुलशरीर के माध्यम से अनुभुती कराकर अपने साथ साधक को जोडता है, और उसका हाथ थामकर चलता है, क्योकी "मोक्ष की स्थिती उसे अकेले नही सामुहीकता के साथ पानी है," अब अगर कोई उसका हाथ छुडाकर भागे तो वह कुछ नही करता केवल यही समझता है, उसका स्टेशन आ गया और वह "उतर गया-"

(२५)

गुरु साधक का अंन्तीम स्टेशन तक पहुचने का अभी समय नही आया है, प्राय ऐसा होता ही है, सुक्ष्मशरीर लगाव के कारण सभी मोक्ष तक पहुचे ऐसा सोचता है, लेकिन वह सोचता है, इसके स्तर पर और साधक सोचता है, अपने स्तर पर साधक नही जानपाता की सुक्ष्मशरीर वह विशाल नदी के समान है, जो अंन्त मे "विशाल प्रशान्त महासागर" मे विलीन होने वाली है, और यह विशाल नदी मे कई छोटी छोटी नदीया व नाले आकर मील रहे है, और अपने मै के अस्तीव को विलीन कर रहे है, वे भी केवल विशाल नदी समाहीत होनेभर से प्रशान्त महासागर तक पहुचने वाले है, स्थुल शरिर साकार है, तो सुक्ष्मशरीर निराकार होता है, "निराकार ने साकार के माध्यम से ही आप तक पहुचा है, इसलीये आपको भी साकार के माध्यम से ही निराकार तक पहुचना होगा", याद रखे आपका साकार रुप मे है, इसी लीये निराकार को भी आपके पास तक पहुचने के लिये साकार का ही सहारा लेना पडा है, तो आपको भी निराकार तक पहुचने के लीये साकार का सहारा लेना होगा

Shree Shivkrupanand Swami
Founder
Gurutattva

साकार से निराकार तक की यात्रा ही आपकी आध्यात्मिक प्रगती की यात्रा है नर से नारायण तक की यात्रा है।
स्थुल शरीर के हाथ मे नही है। पर स्थुल शरीर को आपसे हुये "प्रेम" के कारण ऐसा सदैव लगता है की सभी को वह कर्ममुक्त अवस्था प्राप्त होनी चाहिये लेकिन वास्तव मे ऐसा होता नही है। प्रा:य साधक इस संसार का "मायाजाल" मे और "पुर्वजन्म के कर्मो" के कारण इस स्थिती तक पहुच ही नही पाते है। उनके कर्मे ही उनके आडे कीसी भी निमीत्य से आते है। और वे "सामुहीकता से दुर हो जाते है।" मै तो केवल देखते रहता हु। क्या कर सकता हु. इसी लीये कह रहा हु "अपेक्षा" के साथ इस मार्ग मे मत आओ "शौक" मानकर इस मार्ग मे आओ तो वहाँ पहुचोगे जीसे "कर्ममुक्त अवस्था" कहते है।
आप सभी को खुब खुब आशीर्वाद

आपका अपना
बाबास्वामी
16/2/2022